

MY FATHER AND GILLETTE

Ferdinando Frega — Nando the Scribe

Gillettenarrative.com

मेरे पिता और जिलेट

जिलेट नैरेटिव — निजी अभिलेखागार

मेरे पिता अप्रैल 2025 में चल बसे।

तब से एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब उनकी मौजूदगी मेरे मन से होकर न गुज़री हो।

मौत आदमी को कमरे से हटा देती है।

बातचीत से नहीं हटाती।

मैं जितना बूढ़ा होता जाता हूँ, उतने ही उनके टुकड़े अपने भीतर छिपे हुए पाता हूँ।

हाव-भाव। चुप्पियाँ। प्रतिक्रियाएँ। लोगों को देखने के ढंग।

जो विरासत मायने रखती है, वह कभी पैसा नहीं होती।

वह पहचान होती है।

जब मैं जवान था, वे मुझे देखते और कहते कि मैं उन चीज़ों के क़ाबिल हूँ जो उनकी अपनी पहुँच से परे हैं।

मुझे लगता था वे मुझे छेड़ रहे हैं।

मुझे लगता था पिता ऐसी बातें इसलिए कहते हैं कि पिताओं का फ़र्ज़ ही है अपने बेटों के बारे में नामुमकिन पर यक़ीन करना।

अब मैं समझता हूँ।

वे मेरी तारीफ़ नहीं कर रहे थे।

वे मुझे वह भरोसा उधार दे रहे थे जो मैंने अभी कमाया नहीं था।

उन्हें वे रास्ते दिखते थे जो मुझे नहीं दिखते थे।

वे दरवाज़े जिनके होने का मुझे पता नहीं था।

वे संभावनाएँ जिन्हें खोजने की कोशिश में मैं दशक लगाने वाला था।

हम बाप-बेटे थे।

फिर हम दोस्त बन गए।

वैसे दोस्त जो ज़िंदगी, औरतों, जीतों, ज़िल्लतों और सपनों के बारे में खुलकर सच बोलते हैं।

फिर हम सहकर्मी बन गए।

साज़िश के साथी, जिन्हें काम ने, ख़ून ने, और मामूली हदों को मानने से ज़िद्दी इनकार ने जोड़ रखा था।

बाक़ी सब से परे, हमारा उपनाम एक था।

एक उपनाम जो अब इसलिए नहीं बचा है कि वह दस्तावेज़ों पर लिखा है, बल्कि इसलिए कि वह नैरेटिव में दाख़िल हो चुका है।

स्मृति में दाख़िल हो चुका है।

जिलेट नैरेटिव में दाख़िल हो चुका है।

कभी-कभी मुझे अजीब-सा एहसास होता है कि वे अब भी देख रहे हैं।

जज की तरह नहीं।

आलोचक की तरह नहीं।

उस आदमी की तरह नहीं जो कहता है:

“मैंने कहा था न।”

नहीं।

बल्कि एक ख़ामोश दर्शक की तरह, जो उस प्रयोग को परख रहा है जिसे रचने में उसका हाथ था।

एक बेटा जो कभी निर्देश-पुस्तिका पर नहीं चला।

एक बेटा जो बार-बार फ़ॉर्मेट से बाहर निकल गया।

एक बेटा जिसकी ज़िंदगी ने ऐसे नतीजे दिए जिनका अंदाज़ा कोई समझदारी से लगा ही नहीं सकता था।

मुझे उनकी याद आती है।

उनकी मुस्कान।

उनके ठहराव।

उनकी चुप्पी।

उनके फ़ैसले।

स्मृति में सहेजे वे छोटे-छोटे फ़्रेम जिन्हें कोई अभिलेखागार रख नहीं सकता और कोई तकनीक लौटा नहीं सकती।

सत्ताईस की उम्र में वे इतालवी सेना में कैप्टन थे।

पर ओहदा उन्हें कभी बयान नहीं कर पाया।

जो चीज़ उन्हें अनोखा बनाती थी, वह ज़्यादा सीधी थी।

वे मेरे पिता थे।

मेरे वजूद का शांत हिस्सा, जबकि बाक़ी दुनिया शोर मचाने की होड़ में लगी थी।

और इसलिए, मैं उन्हें लिखूँगा।

जहाँ कहीं भी वे हों, वहाँ।

मेरा इंतज़ार कीजिए।

पर अभी नहीं।

अभी काम अधूरा पड़ा है।

अभी रहस्य अनसुलझे पड़े हैं।

अभी वे कहानियाँ बाक़ी हैं जिन्हें लिखा जाना है।

एक दिन मैं पहुँचूँगा।

और जब पहुँचूँगा, हम साथ हँसेंगे।

कामयाबी पर नहीं।

नाकामी पर नहीं।

सफ़र के बेतुकेपन पर।

क्योंकि जिया हुआ अनुभव वे कहानियाँ सुना सकता है जिनकी बराबरी कल्पना कभी नहीं कर पाएगी।

अलविदा, पापा। फ़िलहाल।

आपका बेटा,
फर्दिनांदो